

डा. योगानन्दझा

पिता : स्व. रामलखनझा

जन्मतिथि : 11 जनवरी, 1955 इसवी

स्थायी पता : भगवतीस्थान मार्ग, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा- 846001 (बिहार)

दूरभाष : 06272-244161

चलवार्त्ता : 09334493330

वृत्ति : अंकेक्षण, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड, पटना

प्रकाशित पुस्तक : (1) लोकजीवन ओ लोकसाहित्य (निबन्ध 1986)

(2) परिणीता (कथा-काव्यांश 1987)

(3) मैथिली शाक्त साहित्य (सम्पादन, 1996)

(4) फकीर मोहन सेनापति (अनुवाद, 2000)

(5) आलेख सञ्चयन (निबन्ध, 2002)

(6) बिहारक लोककथा (अनुवाद 2003)

(7) स्नेहलता (विनिबन्ध, 2006)

(8) मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष (निबन्ध, 2006)

(9) गहबर-गोत (निबन्ध, 2007)

(10) लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा (निबन्ध, 2007)

(11) मैथिली हनुमान चालीसा (सम्पादन, 2007)

(12) मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (शोध-ग्रन्थ, 2009)

(13) कथा-लोककथा (कथा संग्रह, 2010)

कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' कृत

सीतावतरण

प्रबन्ध काव्य

संकलन- सम्पादन : डा. योगानन्दझा



दासी एकै हुलासी पद सीता केर स्वातिबुन्द
सीता छवि हेतु सदति चातक सन प्यासी छी
सीता पद पूजा आओर दूजा नहि सीता बिनु
सीता गुणगानक निरन्तर प्रत्याशी छी
सीता मन-प्राण आओर ज्ञान-ध्यान सीताजी
सीता तजि आन नहिं जंग मे उदासी छी
स्नेहलता सीता संग बैसथि विदेह घर
सीता भजु सीता हम मिथिला केर वासी छी

सीतावतरण

(प्रबन्धकाव्य)

कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता'

संकलन–सम्पादन

डा. योगानन्दझा

Sitavataran : Narrative Poetry by Kapildeo Thakur 'Snehalata', a Mathili Saint Poet of 20th Century A.D., Lok-Kala Sanskriti Sansthan, Videhnagar Darcri, Samastipur, Rs.50.00

© प्रकाशकायत्त	:	
❖ प्रकाशक	:	लोक कला संस्कृति संस्थान विदेहनगर डरोड़ी भाया-करुआ हजपुरबा जिला-समस्तीपुर (बिहार) पिन-848125
❖ प्रथमसंस्करण	:	2011
❖ मूल्य	:	50.00 (पचास) टाका मात्र
❖ आवरण शिल्प	:	श्रीचन्द्रशेखर ठाकुर
❖ टाइपसेटिंग	:	**शैल प्रिन्टर्स** जी.एन. गंज, लहेरियासराय दरभंगा-846001 मो.-09334933023
❖ निधि-व्यवस्था	:	सुप्रिया
❖ मुद्रक	:	सुधीर प्रिंटिंग वर्क्स राजेन्द्रनगर, पटना-16 दूरभाष: 0612-2687897

उपोद्घात

मिथिलाक समस्तीपुर जिलाक डरोड़ी ग्राममे आविर्भूत स्नेहलता (1909-1993) रामाश्रयी रसिक सम्पदायक विशिष्ट मार्गदर्शक सन्त ओ भक्त कवि भऽ गेल छथि जनिक सरल-सरस ओ भावपूर्ण सौन्दर्य-माधुर्यनिष्ठ पदावली मिथिलामे रामभक्ति ओ संस्कार-व्यवहारपरक गीतावलीक रूपमे रामकाव्यक भारतीय परम्पराकेँ अमूल्य योगदान थिक । ओना तँ रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक आविर्भाव मिथिलामे सत्रहमे-अठारहम शताब्दीमे भऽ गेल छल आ रामभक्तिक प्रसारक हेतु काव्यरचनाक एक गोट विशिष्ट परम्परा स्थापित भेल छल, मुदा भोजपुरी सन्त रामाजी पहिल बेर सीताराम विवाहक विधिपरक कन्या निरीक्षणसँ सम्बद्ध पद मिथिला भाषामे प्रस्तुत कयलनि । रामाजीक पदसँ प्रोत्साहित भऽ मिथिलाक रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक सन्त ओ भक्तलोकनि सीताराम विवाह पदावलीक रचना मैथिलीमे करऽ लगलाह जाहिमे मोदलताकेँ अग्रेसरक रूपमे मानल जा सकैत छनि । मोदलताक बाद स्नेहलता ओहि परम्पराक सूत्रधार भऽ नियामक बनि गेलाह आ रसिक भक्त रचनाकारलोकनिक एकटा परम्परे कायम कऽ देलनि जाहिमे श्रीनिधि, रामेश्वर, रामप्रिया, रसिक अली, हरेकृष्णलालदास, अनिरुद्ध, सियाअली, पद्मलता, रसकान्तिलता, हेमलता, कदमलता, नेमलता, आनन्दलता, प्रेमनिधि, रसमोद निधि, करील आदिक नाम उल्लेखनीय छनि । आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासधाराक प्रवहमान भेलाक बादो साम्प्रदायिक साहित्यक रूपमे एहन पदावलीक अनेको रचनाकार जीवन्त देखि पड़ैत छथि, यथा- नारायणदास 'भक्तमाली', रमाकान्तशरणशास्त्री, प्रताप आदि । आधुनिक मैथिली कविलोकनिमे काशीकान्तमिश्र'मधुप' ओ श्रीप्रभुनारायणझा'प्रदीप' आदिक कतोक रचनापर एहि परम्पराक सुस्पष्ट प्रभाव देखि पड़ैत अछि । ई परम्परा अनवरत रूपेँ डा. कृष्णचन्द्र झा 'मयंक', डा. शोभाकान्तझा, डा. चन्द्रमणि, श्रीरामपुनीत ठाकुर 'तरुण', अरविन्दकुमारमिश्र'नीरज', नन्दकुमारमिश्र आदिक माध्यमे एखनो प्रवहमान अछि ।

सीताराम विवाह पदावलीक अनन्य रचनाकार स्नेहलता एहि साम्प्रदायिक साहित्यकेँ अखिल भारतीय स्तर धरि उत्थापित कयलनि । अपन बहुश्रुति एवं नैसर्गिक पतिभाक बलेँ स्नेहलता नहि केवल विवाह पदावलीये धरि सीमित रहलाह अपितु विनय पदावली, झूला, चेतावनी ओ शिववाणी संकीर्त्तनक

संगहि कवित्त, ग्वालरी, समसामयिक ओ समाजसापेक्ष मुक्तक रचना, स्नेहशतक दोहावली आदिक रचना कऽ बहुआयामी रचनाकारक रूपमे ख्यात भेलाह ।

हिनक द्वारा एक गोट प्रबन्धकाव्य सेहो लिखल भेटल अछि जे अद्यावधि अनधीत ओ अनालोचिते रहल अछि । ई प्रबन्धकाव्य सीताक जन्म-प्रसंग पर आधारित अछि, तेँ एकर नामकरण *सीतावतरण* कयल गेल अछि । ओना अपन प्रकृत स्वरूपमे जखन ई स्नेहलताक सुहृद् रामलगनठाकुर (श्रीदिनेश्वरठाकुरजीक पिता, डरोड़ी)क पोथाक संग स्नेहलताक हस्तलिपिमे एकटा कापीमे भेटल छल, ताधरि नामकरणहीने छल ।

स्नेहलताक ई प्रबन्धकाव्य वस्तुतः गाहर महन्थक ओहिठाम आयोजित जानकी नवमीक पर्वपर आमन्त्रण पओलाक बादो ओहि उत्सवमे भाग नहि लऽ सकबाक *शोकक श्लोकत्व*मे परिणत होयबाक प्रमाण थिक । एहिमे जानकी जन्मक जे कथा कहल गेल अछि से प्रसिद्ध रहितो अनेकठाम कल्पना ओ नूतन उद्भावनासँ प्रेरित बुझना जाइत अछि । सम्पादनक क्रममे कथावस्तुक मांगक अनुकूल स्नेहलताक कतोक मुक्तक गीतकेँ स्थान-स्थान पर अनुगुम्फित कऽ प्रबन्धात्मकताकेँ संपुष्ट कयल गेल अछि । अन्तमे, परिशिष्टमे स्नेहलताक गीतावलीक नमूना प्रस्तुत कऽ हुनक कवि-व्यक्तित्वक रेखाचित्र प्रस्तुत करबाक प्रयास भेल अछि ।

लोककण्ठमे विराजमान स्नेहलताक कतोक गीत अप्रकाशित रहबाक कारणे आब क्रमशः विलोपनक स्थितिमे जा जूमल अछि । तेँ एहि प्रबन्ध काव्यक प्रकाशन मैथिली साहित्यक विकास मार्गक हेतु अपन उपादेयता सिद्ध कऽ सकत, से सहजहि बोधगम्य अछि ।

संकलन-सम्पादन ओ मुद्रणक क्रममे भेल त्रुटिक हेतु क्षमायाचनेटा अवलम्ब ।

विवाह पञ्चमी
दिनांक 10 दिसम्बर, 2010

योगानन्द झा
भगवतीस्थान मार्ग, कबिलपुर
लहेरियासराय, दरभंगा- 846001
सम्पर्क सूत्र: 09334493330

सम्पादककेँ **वैदेही विवाह संकीर्त्तन**क प्रति प्रदानपूर्वक स्नेहलताक आशीर्वचन

श्रीगणेशाय नमः...
श्रीसीतारामाभ्यां नमः
भावपुत्र श्री-
चि० योगानन्द झाको
यह पुस्तक आशिर्वाद स्वरूप
प्रदान करता हूँ/जो सीताराम के
परिवार का सदा मंगल करता
रहेगा//

"स्नेहलता"
विदेह नगर (डरोड़ी)
पो० करख आ/ हनुपुरवा
जि० समस्तीपुर
स्नेहलता

समर्पण वाक्य

संतशिरोमणि सदा सरलचित सीताराम उपासी
रामचन्द्र शुभ नाम रामप्रिय श्रद्धाभक्ति हुलासी
मठाधीश गरिमा गुण गौरव गाहर ग्राम निवासी
रामचरितमानस के मधुकर हरिपद प्रीति पियासी
भाव सुमनमय छोट पुस्तिका भक्त समाजक दर्पण
स्नेहलता लतराय चरण पर सादर कयल समर्पण

रचनाक हेतु

एहि रचना के आदिमे अछि राखल किछु हेतु
व्यक्त करै छी से प्रथम श्रद्धाभक्ति समेतु
ग्राम डरोड़ी वाटिका जे थिक नगर विदेह
सीतारामविवाहमे लतरल *लता सिनेह*
ललित लता लग लँगोटिया साथी *राजाराम*
आपसकेर सहयोगसँ जीवन सफल ललाम
कृपा किशोरिक कुञ्जमे हमरो लेलन्हि खीचि
सीता संग निवाहती कृपा वारिसँ सीचि
आदि इजोरिया पक्ष छल पावन माधव मास
हुनक लिखल एक पत्रिका आयल हमरा पास
पढ़ि आमन्त्रण पत्रिका उमड़ल प्रेम अथाह
मित्रक घर आयोज्य अछि जानकि जन्म उछाह
किछु कारणवश यज्ञमे लै नहि सकलहुँ भाग
भेल हृदयमे प्रेरणा रचनामे अनुराग
सित नवमी वैशाख दिन मध्य दिवस सुखधाम
कलम उठाओल हाथमे पूर भेल मनकाम
एहि कारण ई पुस्तिका आयल सभक समक्ष
क्षमायाचना *स्नेह* के त्रूटि सकल प्रत्यक्ष

श्रीगणेशाय नमः

जय गजवदन गणेशजी जय जय जय सुखसार
विघ्नहरण मंगलकरण सकल सिद्धि दातार
जय जय वरदे शारदे विमल बुद्धि आगार
सानुकूल रहु दासपर दिअऽ विवेक-विचार

सरस्वती वन्दना

(1)

माता सरस्वति हे, कहिया हरब अज्ञान ॥ ० ॥
हम सन्तान अहाँ छी माता, हमरा सभके बुद्धि विधाता
अपने कला के खान ॥ ० ॥
बड़-बड़ आस लगा कऽ अयलहुँ, भेलहुँ कृतारथ दर्शन पयलहुँ
पुरल सकल अरमान ॥ ० ॥
विद्या बिना बड़ दुःख कटै छी, ताक्रू कने हम साँचे कहै छी
ममताक नाता लिअऽ मान ॥ ० ॥
लतिका सनेह पर अँखिया उठाबू, पूत कपूतो के नहि भटकाबू
अपने कृपा के निधान ॥ ० ॥

(2)

दिअऽ कने करुणा के कोर, माता शारदे ॥
शिशिरक अंत वसंत पधारल मदनक सेन बटोर ।
तरुणी तरुवर पतझड़ लेलक पहिरल हरित पटोर ॥

अमुआके डारिपर कुहकय कोइलिया पपिहा मचाबय शोर ।
मुसकैत कलिपर चलि अलि गुञ्जत झुकि-झुकि चूमत ठोर ॥
दुरस पवन बहइछ सखि रसे रसे मधुरितु भेल विभोर ।
मगन सुमन सब गगन निहारथि रुसल हमर चितचोर ॥
एहन सुखद दिन वीणक धुनि सुनि प्रकृति हँसत चहु ओर ।
स्नेहलता अविवेक हरण करु एक भरोसा तोर ॥

(3)

उठाय जननी हे, उठाय जननी
तनि ताकू आब नजरि उठाय जननी ।
दुनिआ के आशा मे जीवन गमाओल
ज्ञानक बिना शान्ति कहियो ने पाओल
ठगि लेल माया महान ठगनी हे ॥ ० ॥
पाओल जगतमे न संकट निवारण
रहलहुँ अहाँ माता अधम उधारन
सूझय न मारग अन्हार जननी हे ॥ ० ॥
सब जग सराहथि माता के ममता
माता के देखल अपरिमित क्षमता
अपने के महिमा अपार जननी हे ॥ ० ॥
माता सरस्वती ! बीतल से बीतल
स्नेहक करेजा करू आब शीतल
काटू अविद्या छिपाड़ ठगनी हे ॥ ० ॥

(4)

माता शारदा के शरणिआ जा जा मनुआँ ॥ टेक ॥
क्षीर-नीर के भेद बताबथि जनिकर हंस सवारी
जिनका पदरज मणिसँ होयत मानस के उजियारी
मेटय जीवन के दुर्गनिआ ॥ ० ॥
विद्या अओर अविद्या फेंटल ई जग गोरखधंधा
ज्ञानी भवसँ पार उतरता, मरत ज्ञान केर अंधा
मूरख, काज न अयतौ दुनिआ ॥ ० ॥
तीन भुवन सुर-नर-मुनि-ज्ञानी तोरेटा गुण गाबय
कृपा अहाँके पाबि केओ जन, जीवन केर फल पाबय
सुमिरब हरदम तोर चरणिआ ॥ ० ॥
विद्यादानी गिरा भवानी शारद वीणापाणी
उर अंतर मे ज्योति जराबू *स्नेहलता* अज्ञानी
गाबथि हरदम तोर भजनिआ ॥ ० ॥

●

त्रेतामे साकेत मे, एक दिन भेल विचार ।
मर्त्यलोकमे हे प्रिये, लेब मनुज अवतार ॥

भूतल पर घोर अनीति बढ़ल, मिटि रहल धर्म मर्याद सकल ।
सुर सन्त धेनु द्विज व्याकुल छथि, भय रहल जीव बर्बाद सकल ॥

इर्ष्या द्वेष विरोध परस्पर, दुर्दिन नाचथि राति दिना ।
विकल प्राण जन-जन्तु कराहथि, त्राहि-त्राहि सुख शान्ति बिना ॥
भेल अधर्मक राज धरातल, पथ त्यागथि ग्यानी-ध्यानी ।
व्यथित भक्त के आर्त्तनाद सुनि, मन होइछ हमहूँ कानी ॥
यावत् नहि अवतार लेब हम, चैन कहाँ कनिको मन मे ।
पड़ि गेल हृदय दराड़ि देखि, दुःख कल्प बितै अछि क्षण-क्षणमे॥
चलु ककरो सन्तान रूप मे, मानव बनि, निश्चय निर्भय ।
करत क्रुद्ध भय युद्ध मरत सभ, अन्त काल पाओत परिचय॥
हम दशरथनन्दन बनि आयब, जनकनन्दिनी बनब अहाँ ।
मिथिला बीच विवाहक लाथे, संग हैब संग चलब जहाँ ॥
करब सहाय हुनक जे जगमे, धरम धुजा धयने रहता ।
एहि विधि नव संसार बसायब, लतरायब पुनि *स्नेहलता* ॥

उद्भव-स्थितिकारिणी अहिंक हाथ संहार ।
बिना शक्ति नहि भय सकत सफल हमर अवतार ॥

मनु शतरूपा भेला दशरथ-कौशल्या अवध मे जाय
भेलनि बेटा रामचन्द्रजी साकेतहुसँ जखने आय
जनम उछाह मनाबथि राजा घर-घर बाजय अवध बधाय
लुटबथि सब सम्पत्ति, वसन-मणि-मुक्ता संगे दुधगरि गाय

रामजन्म सोहर

(1)

कानल शिशु नवजात, श्रवण सुनि, जुड़ भेल हे ।
ललना, कौशल्या के पुरल मनोरथ, राम जनम लेल रे ॥
दौड़ल नगरक नारि, नउरिया प्रथम गेल रे ।
ललना, रानी देल गले मणिहार, नउरिया बिहसि लेल रे ॥
बचबा देखइते झुकि खसल, नउरिया बेहोश भेल रे ।
ललना, कोरबा उठाय मुँह देखि, कौशल्या से छीनि लेल रे ॥
युग-युग जीबय एहो बालक, जगत आनन्द भेल रे ।
ललना, *लतिकासनेह* गाबय सोहर, आनन्द मगन भेल रे ॥

(2)

जखन सुनल राजा दशरथ राम जनम लेल रे ।
पुरब जनम सुधि आयल जनम सुफल भेल रे ॥
कखन देखब हम बालक हृदय जुड़ायत रे ।
राखल रघुकुल लाज कि राज लुटायब रे ॥
एहन अनुप रूप बालक कहाँ हम पायब रे ।
मोरा घर अयलनि ब्रह्म कि प्राण जुड़ायब रे ॥
धनि-धनि अवध नरेश एहन सुत पाओल रे ।
लतिकासनेह के मनोरथ विधना पुराओल रे ॥

(3)

आइ आबि गेला राम अवधपुर मे।
गाबय सुर-मुनि-सन्त, नाचय नवल वसन्त
नहि बजबा के अन्त, अवधपुर मे ।
सब सुर समुदाइ, गाबथि फुल बरसाइ
बाजय आनन्द बधाइ, अवधपुर मे ।
भेल अवधमे शोर, राम कोशिला के कोड़
सब आनन्द विभोर, अवधपुर मे ।
नृप मगन महान, घर अयला भगवान
स्नेहलतिका के प्राण, अवधपुर मे ।

(4)

बाजय अवधमे बधैया हे, दशरथजी के द्वार ॥
आयल हमर रघुरइया हे, दशरथ ॥ ० ॥
अवध निवासी सभ आनन्द मगनमा
सोहर गबइत नाचय देहरी-अँगनमा
आनन्दविभोर भेली मैया हे, दशरथ ॥ ० ॥
राम के जनम सुनि उनटल नगरिया
केकरो ने चीन्है केओ दशरथ दुअरिया
खोलू-खोलू सोइरी केवड़िया हे, दशरथ ॥ ० ॥

राजा लुटाबथि अनधन सोनमा
रानी लुटाबथि दूनू हाथक कँगनमा
भरि गेल निछावर अँगनमा हे, दशरथ ॥ ० ॥
चलु-चलु सखि आइ दशरथ दुअरिया
बचबाके देखब जुड़ायब नजरिया
लतिकासनेह पमरिया हे, दशरथ ॥ ० ॥

(5)

प्रगटल राम धनुधरिया हो रामा, अवध नगरिया
धन धन धन एहो नवमी के तिथिया
धन धन चैत महिनमा हो रामा ।
राजा दशरथ जी के पुरल मनोरथ
धन भेल कोशिला के कोखिया हो रामा ।
गाम-नगर लोक आनन्द मगन भेल
नाचय-गाबय प्रेम मगनमा हो रामा ।
साजि-साजि अवधक महल अटरिया
बाजय लागल विविध बजनमा हो रामा ।
लतिकासनेह के रकटल अँखिया
जुड़ भेल प्रेमी के नयनमा हो रामा ।

(6)

अवध मे बाजय बजनमा हो रामा
चैत शुभ दिनमा ।
रामजी के भेलनि जनमुआँ हो रामा
मंगल शुभ दिनमा ।
आउ ! आउ ! आइ-माइ, पर हे पड़ोसिन
चलु देखी कौशल्या अंगनमा हो रामा ।
केओ जे मांगे अन धन सोनमा
केओ मांगे हाथ के कंगनमा हो रामा ।
नाउनि नाचय, पमरिया नाचय
सब नाचय आनन्द मगनमा हो रामा ॥
मातु कौशल्या बलि-बलि जाइ छथि
पलना झुलाबथि ललनमा हो रामा ।
लतिकासनेह सखि भाग्य सराहथि
देखि छवि आनन्द मगनमा हो रामा ।

(7)

गोर लागु पैआ पड़ु नगरक आइ-माइ
बचबा के दिअउ आशिर्वाद हे ।
बूढ़ बयसमे एहन सुत पाओल
कोखिया के छल मोर भाग हे ।

आइ सफल भेल हमरो मनोरथ
आइ भेल अवध सनाथ हे ।
एहि पुत लागि हम जप-तप कयलहुँ
पूर्व जनम भेल याद हे ।
लतिकासनेह बाबू के नजरि न लागय
एहो छथि त्रिभुवन नाथ हे ।

(8)

साँचे आइ हम तोर रिनिआ हे, सुनु मोर दगरिनिआ ।
पुरुब जनम केर एहो छल मँगनी
एहि रूप लागि भेल छल भिखमँगनी
पैर आइ तोहर सगुनिआ हे सुनु०
हम शतरूपा, पति मनुजी के भेषबा
दुनू तप कैल एहो बेटा के उदेसबा
देने छला हमरो वचनिआ हे सुनु०
प्रथम लगाय दिअऽ अँखिया मे कजरा
केओ ने लगाबय आबि बबुआ के नंजरा
टोनमा न मारे बैरिनिआ हे सुनु०
लतिकासनेह पुछू जुनि बतिया
कौशिला, चमैनिआ के मूक भेल मतिया
काटि देल कोमल पुरैनिआ हे सुनु०

(9)

हँसि हँसि बाजय दगरिनिआ हो रामा, सुनु मलिकिनिआ ।
एहन अनूप रूप कहियो ने देखल
देखिते लागल अधनिनिआ हो रामा ।
नील वरण तन रूप चतुर्भुज
तकलो ने जाय चितवनिआ हो रामा ।
पीत वसन अंग-अंग अलंकृत
क्रीट मुकुट करघनिआ हो रामा ।
वदन छुबैत मोरा सुधि-बुधि बिसरल
कोना काटु कोमल पुरैनिआ हो रामा ।
लतिकासनेह मोरा प्रथम दरस भेल
तोहे मलिकीनी मोरा रिनिआ हो रामा ।

(10)

कर जोड़ि कोशिला कहल हे जगतपति
छाड़ि दिअऽ आब एहो रूप, माइ हे ।
जनमल शिशु बनि बिलखि कऽ कानू
एहो रूप परम अनूप, माइ हे ।
माइके अरज सुनि प्रभु भेला बालक
कानल ब्रह्म सम पूत, माइ हे ।
लतिकासनेह शिव टोनमा लगाओल
कय देल बचबा के चूप, माइ हे ।

(11)

बाजा बाजय बधैया हमर अँगना ।।
राजा दशरथजी सर्वस लुटाबथि,
रानी लुटाबथि हाथ कंगना ।।
कैकयि लुटाबथि अन धन सोनमा,
सुमित्रा लुटाबथि सकल गहना ।।
फूआ-बहिन-चाची बाँटथि निछावर,
याचक के पुरल मनक कामना ।।
लतिकासनेह घर किछुओ ने राखल ,
हजमा नेहाल भेल नाचय बभना ।।

●

गेल हकार जनकजी अयला हुनकर गतियो कहल न जाय
लपकि लेल कोड़ा मे शिशुकेँ कौशल्या गेली हरषाय
रामजी के मुख चूमि विकल विदेह, बचबा मुसकाय
विधि! बेटी होइत हमरा ई हमरे जमाय
तत्त्व रूपसँ रामकेँ जब देखल मिथिलेश
ज्ञान-योग-बल दृष्टिसँ बूझल छथि सर्वेश
यावत नहि सर्वेश्वरी राखब सुता बनाय
तावत नहि श्रीरामजी हैता हमर जमाय
हृदय बछलता राम प्रति बनल नयनमे नीर
मन चंचल चित चैन बिनु रहि-रहि पुलक शरीर ।

विदा कराय जनक घर अयला, कयल जखन सभ जिज्ञासा।
सभा बजाय सुनाओल घटना, और कहल निज अभिलाषा॥
सुनि सभ कथा सभासद हर्षित, शतानन्दजी कहि उठला ।
राजन विप्र बजाय पठाबू, ऋषि-मुनि सभ आबथि मिथिला॥
ज्ञानदृष्टि, तपबल सँ कहता, महाशक्ति केर भेद पता ।
जेहि विधि अओती एहि मिथिलामे, अओर कहओती जनकसुता॥
जनक बजाहटि सुनि सभ अयला, ऋषि-मुनिगण ज्ञानी-ध्यानी।
कय सेवा सत्कार पूजि पद, कहल मनोरथ नृपरानी ॥

सुनि-सुनि सगुन विचारि सभ कह कुम्भज हर्षाय
पुरत मनोरथ हे नृपति जौं शिव होथि सहाय
करु तप कानन जाय अब रानी सहित महीप
महाशक्ति अवतार के आयल समय समीप
ई कहि ऋषि-मुनिगण सकल गेला निज-निज वास
कयल तपस्या शम्भु हित जनक मानि विश्वास

शैव पदावली

(1)

बमभोला हमरा चाकर रखता कहबनि हे गौरी ॥
भांग निशामे बेमत रहता रखतनि के झोड़ी ।
हम तऽ हरदम हाजिर रहबनि दुनू कर जोड़ी ॥

बाघ-बड़द-मुस-मयुर-साँपमे उठतनि हरड़ोरी ।
बिनु हमरे नहि झगड़ मेटायत भगता घर छोड़ी ॥
नित उठि फूल अकोनक आनब बेलपात तोरी ।
बाबाके सिंगार सजायब नाचब भय भोरी ॥
जखने कहता पीसि पिआयब भांग-धथुर तोड़ी ।
स्नेहलता लतराय चरण पर लतरब बलजोड़ी ॥

(2)

गौरी हमर कसुरबा हे
माफ करथि शंकर सौं कहबनि हमर कसुरबा हे
अपन शुभाशुभ कर्म दोषसँ सभटा भोग भोगइ छी
जेहि विधि रखने छथि बमभोला तेहिना हमहुँ रहइ छी
जे जीवनमे कहियो ने देखल, से सभ आब देखइ छी
बितल घड़ी सभ याद परैयै, तदपि ने चेत रखै छी
जनिका-जनिका अप्पन बूझल, से विरान भय गेला
आइ बुझइ छी अइ दुनिआमे, सब स्वारथ के खेला
थाकल तन-मन थाकल पैरुख, आब होइछ पछतावा
स्नेहलता बुझि पड़ल आब जे, हमर अपन छथि बाबा

(3)

जय हो शंकर दानी, जय हो शंकर दानी ।
एक अधम पर पलक उघारू, अपन टहलुआ जानी ॥
हे दानी, एक अहीँ दुःखभंजन
हे दानी, आब सहल बड़ गंजन
भवसागर के बीच भँवर मे, डगमग नाव पुरानी ॥
हे दानी, तीन भुवन यश गाबय
हे दानी, चारि पदारथ पाबय
जे बेलपात-धथूर चढ़ाबय, आँक-गंगाजल आनी ॥
हे दानी, देखल जग के खेला
हे दानी, सब स्वारथ के मेला
हाय-हायमे जीवन बीतल, कहब की, अपन कहानी ॥
हे दानी, आयल द्वार भिखारी
हे दानी, बुधि - बलहीन अनारी
स्नेहलता केर सबटा हालत जानथि गौरी रानी ॥

(4)

भोला बाबा हमर बड़ दानी, खुशामद अनकर की ?
जे केओ दुःख कर जोड़ि कहै छनि
अधमक पाप न याद रहै छनि
पाथर पिघलि भेल पानी ॥ ० ॥

क्नक कनैल आँक नित लायब
विजया बेलक पात चढ़ायब
ढारब गंगाजल आनी ॥०॥
नित उठि भोरे चरण दबायब
मधुर नचारी गाबि जगायब
आनि देब दतमनि-पानी ॥०॥
स्नेहलता पदपर लतरायब
जे कहता से टहल बजायब
पूजब कलपतरु मानी ॥०॥

(5)

गौरी अहाँ के महेश । भरिसक छथि किछु मति के विशेष ॥
अनका करथि शिव रंकसँ नरेश ।
अपना लै चाही भांग धथुर हमेश ॥
गौरी कोना पोसथिन कातिक गणेश ।
सह-सह करै छनि विषधर शेष ॥
घर परिवार के ने करै छथि उदेस ।
सोच ने फिकिर धयने जोगीक भेष ॥
कहथिन *स्नेह* छथि एहने महेश ।
छोड़ता ने चालि सब, पाकल छनि केश ॥

(6)

गौरी कोना कऽ रहबइ हे, पर्वत ऊपर बाघ साँप लग कोना ..

डाकिन सापिन भूत भयंकर प्रेत पिशाच पड़ोसी
सब मिलि जग संहार करै छथि तैओ सब निर्दोषी
खसत जखन चट्टान बरफ के अंगना बीच अनेको
माथ-कपार कोना कऽ बाँचत अस्पताल नहि एको
एको चुटकी अन्न न घर मे कोना जियब की खायब
नहि खेती नहि सर्विस करता कहति-कहति मरि जायब
तेसर आँखिमे आगिक ज्वाला कंठमे भरल हलाहल
स्नेहलता एक हरियर रहता सिचथि सदा गंगाजल

(7)

गौरी कोना रहैछी चे, भंखर सनकहबा संग गौरी कोना ॥०॥

पर्वत ऊपर वास अहाँके बरफक बीच बसेरा ।
सासु-ससुर नहि पास-पड़ोसी भूत-प्रेत संग डेरा ॥
बेटा एक, मुँह हार्थीके, दोसर पूत षडानन ।
खेत-पथार न खरची घरमे अपनो छथि पंचानन ॥
मूसक दुश्मन साप, साप के दुश्मन मोर भयंकर ।
सदा बाघ बसहा के दुश्मन वाहन पोसल शंकर ॥
कनक-कनैल जहरमे मातल, तै पर भांग पिबै छथि ।
स्नेहलता घर कोना चलै छनि अपने कोना जिबै छथि ॥

(8)

एहन सावनमे बमभोला भंगिया बेसी खैयो ना ।
ऊँच शिखर पर लागल हिड़ोला धीरे मचकैयो ना ।
अति सुकुमारी कोमल गिरिजा हिनक सुधि लियौ ना ।
बसह बाघम्बर भुजंग के डोरी गाबे हर हर ना ।
भीड़ पड़य फुफकारय वासुकि *स्नेह* बिसरैयौ ना ।

(9)

बाबा अधिक भांग जनि पीबू, जग मे हँसी करैये लोक ॥
पाँच जनामे मुख तेहत्तर, घरमे एक न दाना ।
अपने मुखिया भीख मँगै छथि, और के कोन ठेकाना, जगमे॥०॥
साँप-मयुर-मुस-बड़द-बाघमे अजबे सब संघाती ।
राति अन्हरिया हरपट उठलनि, घरमे दिया न बाती, जग मे ॥०॥
बहुतो दीन कटै अछि कौहर, भरले भवन भरै छी ।
जानि रूप अपने शंकर छी, एना किअए बिसरै छी, जग मे ॥०॥
जतबे नशा पचय से पीबू, आयल आब बुढ़ारी ।
स्नेहलता के स्नेह मे राखू स्नेहसिंधु त्रिपुरारी, जग मे ॥०॥

(10)

शिवक संग होरी खेलथि पारवती ।
लाल गुलाल गाल मलि गौरी, रूसल जानि करत विनती ।
शिव रिसिआय शिवा तन तोपथि अबिर बनाय अपन विभुती।

पिचकारी हँसि गौरि चलाबथि, रंगसँ भीजल बुढ़बा जती।
शिव छोड़ल गंगधार पिचकारी, शिव सनकाह न ठीक मती।
शिवगण भागि चढ़ल गिरि ऊपर, हँसी-खेल भय गेल विपती।
दौड़ि शिवा, शिव गर लपटायलि, चतरि गेल झट *स्नेहलती* ।

(11)

होरी खेलथि सदाशिव-गौरि, शिखर पर फागुन मे ।
डिम-डिम डिम-डिम डमरू बजाबथि साँप रहल फन जोरी ।
डंफ घहराय बाघ सुनि नाचय, बसहा के फुजि गेल डोरी ।
भांग-धथूर पीबि सब सनकल, भेल सभक मति अति भोरी ।
हिलि-मिलि रंग परस्पर डारथि, गाबथि सब जन मिलि होरी ।
स्नेहलता परबत के ऊपर होय रहल महा झिकझोरी ।

(12)

परबत पर शिवजी खेलथि होरी ।
अपनहि हाथ भांग पिबि भोला, सबके पियाबथि बरजोरी ।
भूत-पिशाचिनि-डाकिनि-शाकिनि, गाबथि फाग भेल भोरी।
झोंकल शंभु अबीरक बदला, विभुति उठा झोरी-झोरी ।
सबके आँखि-कान-मुँह भरि गेल, आपस उठल कपरफोड़ी ।
स्नेहलता शिव रूसि पड़यला, गौरी मनाबथि करजोरी ।

देखि तपस्या घोर अति भेला प्रकट महेश ।
धाय धयल रानी सहित चरण कमल मिथिलेश ।।

अपनेके नाम भोला औढरढरनमा से
दुःख मोरा दूर करु, पूर करु मनमा
पूतक उछाह छल दशरथ घरबा
देश ओ विदेशवामे पड़ल हकरबा
मन मोरा रहि गेल कौशल्या अंगनमा से ।।०।।
बचबा के छीनि हम लेल निज कोड़बा
चितबा चोराय लेल राम चितचोरबा
हमरा लगाय देल साँचे कोनो टोनमा से ।।०।।
पूर्ण ब्रह्म हेतु चाही आदिशक्ति बेटिया
दुहुक मिलन देखि जूड़ हैत छतिया
करब जमाय ओहे हमरो परनमा से ।।०।।
देह कँ भुलाय भेला जनक विदेहिया
हरियर- हरियर *लतिका सनेहिया*
रामजी जमाय होथि दिअ वरदनमा से ।।०।।

कहल महादेव हे जनक करु पुत्रेष्ठी यज्ञ
आदि शक्ति सर्वेश्वरी आदि पुरुष सर्वज्ञ

अब जाय करू हे जनक यज्ञ, ओहिसँ सर्वेश्वरि अवतरती।
अपनेकेँ कन्या बनि रहती, असली माता हुनकर धरती ॥
ई धनुष हमर कारण बनतै, मिथिलामे दुहुक मिलैबामे।
थिक निकट भव्य ई समय नृपति, करती बिलम्ब नहि अयबामे॥

एतबा कहि औढरढरन भेला अन्तर्धान
एम्हर, यज्ञ के जनकजी लगला करय विधान

पाबि शिवक वरदान मगन मन, सकल प्रबन्ध करय लगला।
विप्र-सचिव-गुरु-बन्धु बजाओल, घटना सकल कहय लगला॥
शतानन्दजी कहल जनक सौं, राजन् एतबा काम करू ।
ऋषि-मुनिगण अबिलम्ब बजाबू, यज्ञ भूमि के नाम धरू ॥
सभटा सभ सल्तनत करायब, यज्ञ और अभ्यागत के ।
भाइ कहल हम भार गछै छी, सभक सुपास-सुस्वागत के ॥

पावन गंगा लछुमना पावन निर्मल नीर
यज्ञभूमि निर्धारिते सकल सिद्धिप्रद तीर
बनल वेदिका यज्ञ के जानि समय अति अल्प
जनक-सुनयना व्रत-व्रती कयलि सुता संकल्प
सित वैशाखक पंचमी ग्रह-नक्षत्र अनुकूल
कयल यज्ञ आरंभ जत सुर बरसाओल फूल
बरस बीति सित पंचमी आयल माधव मास
देखि विफलता यज्ञमे भेला जनक उदास

जगतविदित सभ माय के बेटी अति प्रिय होय
पुरल न निज मनकामना कहथि सुनयना रोय

पंचमीसँ पंचमी, बरिस दिन बीतल, छुछ पड़ि भेल अरमान, माइ हे।
ठकि लेल मुनि सभ, ठकि लेल नारद, झुठ भेल शिव वरदान॥
विधि विपरीत मोर, यज्ञ विफल भेल, करत मखोल जहान॥
जौं नहि राभ, जमाय बनायब, हति लेब अपन परान ॥
लतिकासनेह, हिया बिच मुरुझायल, विरहक ताप महान॥

देखि सुनयना के विह्वलता, शतानन्द कर जोड़ि कहल ।
धरु मन धीर, यज्ञ जनि छोड़ू, सिद्धि निकट अछि आबि रहल॥

यज्ञारंभक दिनसौं साँचे, बरिस पूरि गेल आइ मुदा
यद्यपि पावन परम पंचमी, लौकिक ऋद्धि-सिद्धिप्रदा
षष्ठी स्वर्गक और सप्तमी, बैकुण्ठक थिक सिधिदायक
गोलोकक फल देत अष्टमी, धीरज धरु हे नरनायक
आदिशक्ति साकेतसँ अओती, नवमी पूर करत मनके
रानि सुनयना सुता खेलओती, रहता मगन जनक सन के

अति प्रकाशमय वेदिका अति आह्लादित धार
गिरि कानन आनन्दमय शीतल सुखद बयार
दसो दिशा लखि शकुन शुभ अछि हमरा विश्वास
नवमी तिथिमे हे नृपति अवस पुरत अभिलाष

शतानन्द के सुनि प्रिय वाणी
लगला यज्ञ करय मुनि ज्ञानी
सुनि प्रिय वचन मगन नृपरानी
सुखइत धान पड़ल जनु पानी

अहाँके दरस लागि रकटल मोर अँखिया हे
मोर मन के बेटी
कतऽ जाय रहली नुकाय हे मोर मन के बेटी
बटिया तकैत मोर छतिया सुखायल हे मोर ॥० ॥
आबि कहु एक बेर माय हे ॥० ॥
एहन सरस भूमि नैहरा बनाबू हे मोर ॥०॥
एहि लागि मिथिला सिहाय हे ॥०॥
लतिका सनेह पाबि अहाँ अइसन धिया हे ॥०॥
रामजी के करब जमाय हे ॥०॥

शतानन्द के स्वप्नमे शंभु देल समुझाय ।
कंचन हल निर्माण कय धरती जोतू जाय ॥
से जानल नृप जनकजी जोतय चलला धाय ।
फारक तरसँ प्रकट भय सुता देल मुसकाय ॥

सोहर

जखन जनक हर धयलनि वरद टोकारल रे
ललना, महिसुर सुनि महिछेदन मंत्र उचारल रे

गगन मगन सुरवृन्द सुमन बरसाओल रे
विधि-हरि-हर सभ वेद सुमंगल गाओल रे
उठल सघन घनघोर गगन घहरायल रे
बिजुरी कड़क सुनि कान नयन चोन्हरायल रे
हरतर देखि नव ज्योति जनक झुकि ताकल रे
लतिकासिनेह के स्नेह नयन मन थाकल रे

तेज पुञ्ज नव बालिका सुन्दर दिव्य शरीर ।
देखि सिराओर मध्यमे भेला जनक अधीर ॥
देखि रूप मुर्च्छित सकल ज्योतिपुञ्ज आकाश ।
कनक वरण तन तेजमय चहुदिस दिव्य प्रकाश ॥
अष्ट सखी सेवित सुखद रूपक राशि अतूल ।
शची शारदा इन्दिरा अगणित तेहि मँह झूल ॥
विधि हरि हर सब सिद्धि जन वेद जोड़ने हाथ ।
गद्‌गद् हिय स्तुति करथि मिथिला भेल सनाथ ॥

जनक सुनयना सकल सुधि बिसरल,
आनन्द मगन विभोर माइ हे ।
पुलकित तन सभ अंग शिथिल भेल,
अँखियासँ झहरय नोर माइ हे ।
देखि दशा विधि-हरि-हर नाचथि,
जनु शशि पाबि चकोर माइ हे ।

बाग वसन्तक जनु जनमंडल,
ताहि बिच जन-मन मोर माइ हे ।
बरसि सुमन सुर सेन सजाओल,
जय जय धुनि चहु ओर माइ हे ।
लतिकासनेह रानी लपकि उठाओल,
पुनि-पुनि चुमि-चुमि टोर माइ हे ।

जखन जनक हर जोतल जगत आनन्द भेल रे ।
ललना, मिथिला के धरती सोहागिन जानकी जनम लेल रे॥
हरषल दशो दिकपाल सुयश-सुख सरसल रे ।
ललना, जय जय होय चहुओर सुनयना मन तरसल रे ॥
बहि गेल सरस समीर गगन घहरायल रे ।
ललना, चमकल परम प्रकाश नयन चोन्हरायल रे ॥
रानी लेल छतिया लगाय हमर बेटी सुन्दर रे ।
ललना, *लतिकासनेह* गाबय मंगल राखु हिय अन्दर रे ॥

चहुदिस जय-जयकार गूजल धरती गगन बिच
लेल शक्ति अवतार बाजन बाजय विविध विधि
गाबथि मंगल गीत नगरनारि, सुरवृन्दवधू
उत्सव परम पुनीत करथि निछावर वसन मणि
उमड़थि जनसमुदाय रहि-रहि दर्शन हेतु सभ
रानी लेथि नुकाय, नजरि न लागय दाइके ॥

बचिया के कोरा लेने नाचे गाबे रनिआ
आइ सखि पूर भेल शिवक वचनिआ ॥०॥
छल न भरोस जिया धिया एहो भेटती
सकल निराशा दुःख-शोक गोरा मेटती
विधना सहाय भेल पुरल लगनिआ ॥०॥
जनक निहारय मुँह गद्गद् छतिया
झहरय नोर मुँह आबय नहि बतिया
रामजी जमाय हेता धिया हेती कनिआ ॥०॥
केओ नहि जानय जग विधिक विधान की
अवधमे राम भेला मिथिलामे जानकी
मिथिला-अवध यश गाबय सारी दुनिआ ॥०॥
बेटी ओ जमाय देखि रहब मगनमा
के के नहि अओता आब हमरा अँगनमा
*लतिकासनेह*मे सनेह के सुमनिआ ॥०॥

●

परिशिष्ट

स्नेहलताक किछु विशिष्ट गीत

मिथिला महिमा

भूमंडल के अमर गोद मे
मुसकाहट सुन्दर मिथिला के ।
ममता भरल सरस रजकणमे
मचलाहट सुन्दर मिथिलाके
योग भोग मे सगुन उपासन
वेद नीतिमय राज सिंहासन
ज्ञान दिवाकर हमर जनकजी
सनक जगतमे आन भेलाके ।
हरियर-हरियर जतय कुञ्ज वन
हरियर-हरियर खेत सफल मन
वसथि वसन्त जतय निशिवासर
करथि प्रदर्शन पूर्ण कलाके ॥
कुसुमित कानन सरिता निर्झर
सतत वेद ध्वनि गुंजन मधुकर
क्षमा दया दम दान मानमय
कलकल-कलकल धुनि कमला के ।
वर- कनिञा सिंगार मनोहर
रूप वियहुती सभक धरोहर
स्नेहलता लतराय चरणपर
जनकलली श्रीरामलला के ।

मैथिली वन्दना

एहन पतित केर अहीं पति राखब हे महारानी सिया ।
अहिँक चरणमा केर आस ॥ १ ॥
धरम करम हम किछिओ ने कैलहुँ हे महारानी सीया ।
सभ दिन सोहायल सुख - विलास ॥ २ ॥
मिथिला नगरिया बिच भेल मोर जनमुआँ हे महारानी सीया ।
एकरे भरोसा ओ विसवास ॥ ३ ॥
विधि हरि हर सुन नर मुनि किन्नर हे महारानी सीया ।
एही ठाम मेटलनि हियक पियास ॥ ४ ॥
अहींपर *स्नेहलता* आस छथि लगौने हे महारानी सीया ।
दिय सिय पगमे निवास ॥ ५ ॥

पराती

किशोरी जी, कहिया देखब भरि नैन ।
दिन भरि काज कपट मे बिताओल राति बिताओल शैन ।
मकड़ीक जाल फिकिर के मारल राति दिनन नहि चैन ।
सुनिअ जे अपनेक संग रहै छथि निशदिन राजिवनैन ।
लतिका सनेह बहुत दिन बीतल बटिया जोहैत दिन-रैन ।

विनय

अपना किशोरी जी के टहल बजेबइ हे हम मिथिले मे रहबइ
घरही मे हमरा चारू धाम ॥
साग-पात खोंटि-खोंटि दिवस गमेबइ हे हम०
हमरा ने चाही सुख-विश्राम ॥
आगू-आगू झारि-झारि फुलबा बिछेबइ हे हम०
एहिं बाटे चलथिन सीताराम ॥
जाहि विधि रखथिन सीया ताही विधि रहबइ हे हम० ॥
सिया-सिया रटबइ आठो याम ॥
सिया के चरण-रज सरबस बनेबइ हे हम०
एतबे *सनेहिया* मन के काम ॥

राम वन्दना

अपन कमलपद कहिया देखायब हे रघुनन्दन स्वामी ।
आब ने सहल दुःख जाय ॥
परम दयालु अहाँ गरीबनेवाजू हे रघुनन्दन स्वामी ।
किए देल हमरा बिसराय ॥
लख चौरासी हम घुमि फिरि अयलहुँ हे रघुनन्दन स्वामी ।
एखनहुँ चरणमा लिअऽ लगाय ॥
जाहि विधि राखू अहाँ अपन दुअरिया हे रघुनन्दन स्वामी ।
कोनो ने *सनेहिया* के उपाय ॥

श्रीकृष्णक पनिघट लीला

(1)

करि सोलहो सिंगार, गोपी चलल हजार
लेल गगरी सम्हारि, पनिघटवा पर ॥
नन्दलाला के बजा लेब, अपना लग कऽ बैसा लेब
तब करब सजाय, पनिघटबा पर ॥ १ ॥
कोइ कहे इठलाय, लेब लग मे बैठाय
देब सड़िया पेन्हाय, पनिघटबा पर ॥ २ ॥
हुनका छल से बुलायब, आइ औरत बनायब
करब असली उपाय, पनिघटबा पर ॥ ३ ॥
कृष्ण राधा के बनायब, हाथ मुरली धरायब
मोर मुकुट सजायब, पनिघटबा पर ॥ ४ ॥
हरि जयता सिठिआय, जैतेन्ह महिरम बुझाय
हम सब थपड़ी बजायब, पनिघटबा पर ॥ ५ ॥
मिलि गोपी समुदाय, लेल गगरी उठाय
सब सोझे चली जाय, पनिघटबा पर ॥ ६ ॥
लीला गाबे *कपिलेश,* मजा पनिघट के लेब
देखब हरि के फरेब, पनिघटबा पर ॥ ७ ॥

(2)

जयबइ आजु सामर गोरिया हे यमुना के तीर ॥
नन्द के लाला मुरलीवाला नाम जकर यदुवीर ॥
छल से बजायब लग मे बैसायब करब अपन तदबीर ॥
फाड़ि मांग, टीका पहिरायब, पहिरायब एक चीर ॥
सब गोपी मिलि रास मचायब होयता श्याम अधीर ॥
गगरी भरि-भरि चलि-चलि देबनि तनिक न तकबनि फीर ॥
कपिलदेव होशियारी राखब बुड़बक जाति अहीर ॥

(3)

सुनु आगू के बयान लीला सरस महान
हरि परम सुजान पनिघटबा पर
पुनि गेली यमुना तीर गोपी भेली अधीर
आजु नहि यदुवीर पनिघटबा पर ॥ १ ॥
देखि गोपी समुदाय हरि रहल नुकाय
एक सोचल उपाय पनिघटबा पर ॥ २ ॥
भेष नारि के बनाय मिलि गेल यदुराय
नहि पड़ल बुझाय पनिघटबा पर ॥ ३ ॥

नारी रूपमे कृष्ण वचन

कहे सुनु सखी मोर छीपल हैत चितचोर ।
सुनु हमरो निहोर पनिघटबा पर ॥
सब चीर-चोली लाउ सब जल धसि जाउ
हरि के छल से बजाउ पनि० ॥
देखि ककरो ने साथ लग औता यदुनाथ
हम धय लेब हाथ पनि० ॥
सखि हँसल भभाय थिक असल उपाय
देखब जाय न पराय पनि० ॥
सब सुनि तदवीर सखि देल चोली-चीर
धसि गेल सब नीर पनि० ॥
चीर-चोली के समेटि लेल अंग मे लपेटि
कहथि करैत रहु भेट पनि० ॥
हरि देल पिहकार गेला कदम के डार
गोपी धुनथि कपार पनि० ॥
पूछे यशोदा के लाल कहु अपन हवाल
हमरा बूझल गमार पनि० ॥
गोपी कहथि कर जोड़ि सुनु हमर निहोर
नहि लेल किछु तोर पनि० ॥

सुनु लाला बुधियार दिअऽ सड़िया हमार
गुण मानब तोहार पनि० ॥
कहे कुमर कन्हाइ सुनु गोपी समुदाइ
इहे हमर कमाइ पनि० ॥
सब गोपी हरजाइ कहियो खेबा न चुकाइ
आइ एके बेर पार पनिघटवा पर ॥
सुनु कुमर कन्हाइ खेबा केहन चुकाइ
कोन तोहरो कमाइ पनि० ॥
बाजी बात न सम्हारि करी उल्टे अराड़ि
हम करी घटवारि पनि० ॥

(4)

गेली गोपी खिसिआय कहब यशोदा के जाय
करब तोहरो उपाय पनि० ॥
सुनु गोपी हमर बात साड़ी भेटत परात
तावत भीजु सारी रात पनि० ॥
आउ जलसँ बहार मांगु हथबा पसार
करु सेवा के करार पनि० ॥
गोपी जनि कदराउ छोडु लाज न लजाउ
तखन साड़ी लेने जाउ पनि० ॥
गोपी करथि विचार छौड़ा परम छिनार

आइ कयलक उघार पनि० ॥
सभ गोपी हिया हारि भेली जल से बहार
कान्हा देल हहार पनि० ॥
गोपी सकल लजाय गेली लाजे कठुआय
एको चलल न उपाय पनि० ॥
जब देखल यदुवीर गोपी परम अधीर
छोड़ि देल चोली-चीर पनि० ॥
सब प्रमुदित भेल अपन चीर चीन्हि लेल
लीला गाबय *कपिलदेव* पनि० ॥
कहे हरि घर जाउ गोपी सब दिन आउ
खेबा एहिना चुकाउ पनिघटवा पर ॥

महेशवाणी

(1)

भागु भागु भागु सखि छोडु ई नगर हे ।
भूत-प्रेत संग अनला गिरिजा के वर हे ।
नहि छनि बाड़ी-झाड़ी नहि छनि घर हे ।
भांग ओ धथुर पर करथिन गुजर हे ।
झोखरल अंग-अंग तनमे ठठर हे ।
खाक लेपि अयला भोला देह मे उजर हे ।
संग कोना रहथिन धिया कण्ठमे लहर हे ।

सौंसे देह साप करे सहर-सहर हे ।
कहथिन *स्नेहलता* जनि करु डर हे ।
विधना के लीखल सभसँ ऊपर हे ।

(2)

किछिओ ने लेल विचारी, हिमाचल
नारद बाभन से कैलनि इयारी, वर खोजि अनलनि भिखारी हिमाचल
ओहि भँगिया के बाड़ी ने झाड़ी, पर्वत के ऊपर घराड़ी हिमाचल
भांग-धथुर के करथिन पुछारी, बसहा बड़द असवारी हिमाचल
ककरासँ बजथिन गौरी बेचारी, नहि शिव के बाप-महतारी हिमाचल
कपिलदेव गाओल नचारी, मोर धिया रहती कुमारी हिमाचल.

(3)

बौरहवा के बरियात मे सब बात अनोखी दैया
अपने दुलहा बूढ़ बड़द पर भांग-धथूर खेबैया
संगी साथी नंगटे धावय बात न केओ सुनबैया
भूत-प्रेत सभ चलल बराती भूते चँवर डोलैया
भूते नाचय ढोल बजाबय भूते-प्रेत गबैया
ककरो मूँह सातसँ ऊपर आँखि न एक तकैया
लंगड़े-लुल्हे-लोथ अनेको कुबड़ा के पुछबैया
ककरो मुँह श्वान-गीदर सन केओ मुखहीन देखैया
केओ-केओ लुल्हा कूदै-भागय जेना बेंग भदवैया
गज सन पेट सीक सन गर्दनि घेघक तौल अढ़ैया

स्नेहलता धनि शंकर के गण विविध वेष बनबैया ।

(4)

कोना परिछब गे दाइ ।
वर के तरफ हमरा तकलो ने जाइ ॥
बिच्छू के घौड़छा मउरिया सजाय ।
बिढ़नी के घौड़छा लवङी बनाय ॥
अयला पहिरि मुण्डमाला जमाय ।
गर्दनिमे साप रहि- रहि फुफुआय ॥
ओढ़ना बघम्बर विभूति रमाय ।
एँड़ीमे देखियनि फाटल बेमाय ॥
संगमे भूत-प्रेत अनलनि बजाय ।
फरके परान सुखय लगमे के जाय ॥
नारद कतऽ आइ रहला नुकाय ।
बभना के मारितौं चानी तकाय ॥
इहो थिका महादेव त्रिभुवन राय ।
चलु *कपिलदेव* झट परिछू जमाय ॥

(5)

हम नहि जानल गे माई ।
एहन बूढ़ वर नारद लौता झूठे कैल बड़ाई ॥
तीन लोक के ठाकुर कहि-कहि हमरा देल पतियाई ।
चारिम पनमे भिखमंगा के आनल बैल चढ़ाई ॥

एक दिस गौड़ी के मुँह तकइ छी, एक दिस बूढ़ जमाई ।
मन होइयै जे एही संतापे, मरि जइतौं किछु खाई ॥
नहि, नहि, हम नहि गौरी बिआहब, जगमे होयत हँसाइ ।
जानि-बूझि कऽ एहन धियाके कोना कऽ देब भसाई ॥
स्नेहलता भन सुनु हे मैया शंभु के लाउ चुमाई ।
करम बाँटि की हुनकर लेबनि, पुरुबक छनि कमाई ॥

(6)

सखि देखिते बनैत ।
जेहन देखल हम शिव के अबैत ॥
मुँहमे न दाँत एको फकफक हँसैत ।
अचरज देखल सिर गंगा बहैत ॥
तीन गोट आँखि देखल टकटक तकैत ।
गरदनिमे लटकल विषधर-करैत ॥
बूढ़े बड़द एक दुब्बर टगैत ।
तेहि पर चढ़ल बूढ़ भांग छकैत ॥
देखल *कपिलदेव* बड़ के अबैत ।
नाङर-लुल्ह सब भटभट खसैत ॥

(7)

जनि पूछू हाल चाल ।
तोहरो जमाय मैना परम कंगाल ॥
अपना जे पाँच मुख बड़ विकराल ।
कातिक के छओ मुख खाइ लय बेहाल ॥

गौरीजी के कहु हम कओन हवाल ।
गणपति के सौंसे देहमे पेटे विशाल ॥
एकेटा मुँह से तऽ होइ अछि काल ।
जै घर तेरह मुँह तकर कोन हाल ॥
हमरा देखैत दौड़ल भूत-वैताल ।
पेट दिस ताकि-ताकि बजबय ताल ॥
सुनि-सुनि मैना पीटथि कपार ।
बजर पड़ौ नारद पर देलक भौजाल ॥
जनि राखू मैना मन मे मलाल ।
कहे *कपिलेश* भोलादानी दयाल ॥

रास

गिरि कैलास के स्वर्ण शिखर पर रास रचल त्रिपुरारि ॥
तैंतिस कोटि देव सब बैसल, धन-धन होथि निहारि ।
पुरुष भेष केर मध्य सुशोभित गद्गद् शैलकुमारि ॥
विष्णु मृदंग रमापति गाइनि ताल देथि मुखचारि ।
सुरपति-शारद वीण बजाबथि राग समय अनुहारि ॥
सौंथ फाड़ि मुखचन्द्र सजाओल नयन कयल कजरारि ।
अंग-अंग सजि-साजि सम्हारल शिव भेला सुन्दर नारि ॥
सुरसरि धार समिटि घर गेली रूप धयल पनिहारि ।
स्नेहलता ताण्डव शिव नाचथि तन-मन विरति बिसारि ॥

पराती

जागु रे मन, शिव छथि गौरीक संग ।
भाल विशाल बाल शशि शोभित तेहि बैसल सिर गंग ।
गौरीक कोर मे गणपति किलकथि कातिक भरल उमंग ।
स्नेहलता अनुपम छवि निरखथि, भेल सकल भय भंग ।

चेतावनी

रामनाम बिनु एहि कलियुग मे, बड़बड़ गंजन हेतउ रे ।
कहियो जनम भरि पेट ने भरतौ, विपति पर विपति सतेतउ रे ॥
वात-पित्त-कफ तीनू दुश्मन, अन्त काल ठोंठियेतौ रे ।
दुनिआ-दौलत-माल-खजाना, सब पड़ले रहि जैतउ रे ॥
माय-बाप और घर के तिरिया संग न एको जयतौ रे ।
बेटा-बेटा महा दुलारू, आगिसँ मुँह झरकैतौ रे ॥
एहि देहिया के कोन ठिकाना, गीध-गिदर घिसियैतौ रे ।
स्नेहलता भजु राम नाम, भव सागर पार लगैतौ रे ॥

स्नेहलताक अन्तिम अपूर्ण रचना

अहाँ के भरोसे आब हमरो जिवनमा हे किशोरीजी हे
ताकु कने पलक उठाय हे किशोरीजी हे
सकल जनम मोर स्वारथमे बीतल हे किशोरीजी हे
आब लागय दुनिआ अन्हार हे किशोरीजी हे